अद्भुत / अल्मोड़ा व बागेश्वर जनपद के कुछ साहसी युवा सरमूल की कठिन यात्रा से सकुशल वापस लौटे

सहस्त्रधारा में है भगवान श्रीराम का सोने का पुल

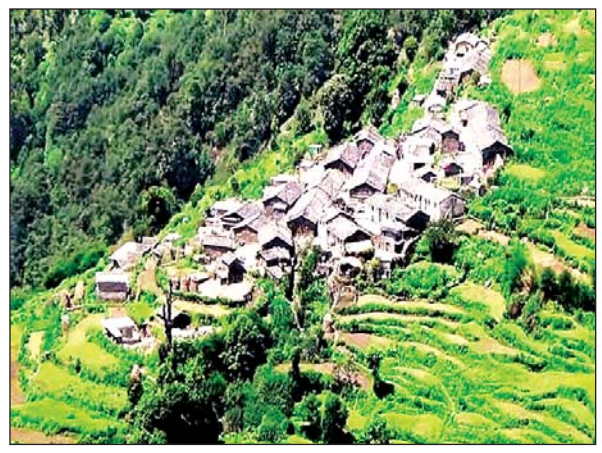

यही है भगवान श्री राम का सोने का पुल, वह स्थान जहां कहते हैं मुनि वशिष्ठ ने तपस्या की थी, बागेश्वर जनपद का अंतिम गांव झूनी तथा यही है सहस्त्रधारा, जहां से तीन धाराएं निकलती हैं। उत्तरांचल दीप

दीपक मनराल
@ dainikuttaranchaldeep.com

अल्मोड़ा। उत्तराखंड देवी भूमि है। कहते हैं कि यहां आज भी कई ऐसे अनछुए और अनदेखे विषम क्षेत्र हैं, जहां ईश्वर के साक्षात मौजूद होने का आभास होता है। कई ऐसी अनसुलझी पहेलियां हैं जिन्हें आज तक कोई हल नहीं कर पाया है। ऐसी ही एक अद्भुत चीज हमारे संज्ञान में आई है। वह है पवित्र सरयू नदी के उद्गम स्थल पर भगवान श्री राम का सोने का पुल। जी हां! हम आज हम अति दुर्गम स्थल पर स्थित सरमूल (सहस्त्रधारा) की हैरान करने वाली कहानी बयां कर रहे हैं।

वह सरमूल, जहां से पवित्र सरयू नदी का उद्गम होता है, वही स्थान जहां भगवान श्रीराम का सोने का पुल आज भी मौजूद है। एक ऐसा रहस्यमयी पुल जिसकी जानकारी बहुत कम लोगों को है। निःसंदेह इस पुल के दर्शन किये जा सकते हैं, लेकिन यहां पहुंचना लगभग असंभव है। हालांकि अल्मोड़ा व बागेश्वर

रहस्य व रोमांच

- सरयू के उद्गम स्थल के कुछ अनछुए पहलू

जनपद के कुछ साहसी युवा इस कठिन यात्रा से सकुशल वापस लौट आये हैं और उनसे प्राप्त जानकारी 'उत्तरांचल दीप' सबसे पहले आपके बीच साझा कर रहा है। इन्होंने काफी दूरी से न केवल इस पुल को देखा, बल्कि जूम कैमरा की मदद से चित्र भी ले लिये। बताते चलें कि सोने के पुल तक पहुंचना तो दूर की बात रही, सरमूल-सहस्त्रधारा में पहुंचना भी साधारण व्यक्ति के बस की बात नहीं। यहां का पैदल सफर बागेश्वर से 80 किमी दूर सूपी गांव से शुरू होता है। लगभग 12 से 13 घंटे की पैदल यात्रा के बाद सरमूल पहुंचा जा सकता है। यहां एक पौराणिक तीर्थ मुनि वशिष्ठ की तपोस्थली, भगवान शिव का मंदिर और एक सोने का पुल भी है। सहस्त्रधारा तीन धाराओं का संगम है सरमूल, दुग्ध और

अंतिम गांव झूनी के ग्रामीणों के साथ साहसी युवा। उत्तरांचल दीप

सहस्त्रधारा। यह वह स्थान है, जहां लक्ष्मण ने शेषनाग का रूप धारण कर चट्टान पर फन मारे और यहां से दूध की नदी बहने लगी। यही वह स्थान है, जहां कभी वशिष्ठ मुनि ने वर्षों तक तपस्या की थी। कहने को तो ये एक विचित्र बात लगती है, लेकिन 'दैनिक उत्तरांचल दीप' आज सरयू नदि के उद्गम स्थल व सोने के पुल के बारे में आपको सटीक जानकारी दे रहा है। सरमूल की यात्रा के इच्छुक हैं तो आपका सफर शुरू होता है बागेश्वर जिले से। सरयू उद्गम स्थल पहुंचने के लिए पहले दिन बागेश्वर से कपकोट के लिए रवाना होना होगा। फिर अगले रोज कपकोट से मुनार होते हुए सूपी के लिए किसी वाहन से जाया जा सकता है। सूपी गांव से फिर पैदल सफर शुरू होता है सरमूल (सहस्त्रधारा) की ओर। करीब दो घंटे तक लगातार कंटीली झाड़ियों के बीच होते हुए आप अति दुर्गम क्षेत्र गांव बैछम पहुंच जाओगे। यह वह गांव है, जहां आज की तारीख तक कोई प्रशासन का कर्मचारी तक नहीं पहुंचा है। इसके बाद अगला सफर आप सरमूल की ओर शुरू करेंगे।

लगभग 5 घंटे तक खड़ी चट्टनों को पार करते हुए आपको झूनी गांव की ओर बढ़ते रहना होगा। सरमूल (सहस्त्रधारा) के इस संपूर्ण यात्रा में कहीं कोई रुकने की व्यवस्था नहीं है। सरमूल पहुंचने के लिए यहां से करीब डेढ़ घंटे का सफर और है। सरमूल पहुंचकर आपको उस अलौकिक ऐतिहासिक स्थल के दर्शन हो जायेंगे, जहां की ढेरों किंवदंतियां प्रसिद्ध हैं। यहां भगवान की खोली यानी वह स्थान जिस जगह से भगवान श्रीराम आया-जाया करते थे, आपको दिखाई देगी। पुराणों में कहा गया है कि इसी जगह पत्थर में जो छिद्र हैं, वहां से भगवान सतयुग व द्वापर में आते-जाते रहे हैं। बताते हैं कि इस पत्थर का आकार मछली की तरह है जिसकी पूंछ आगे मानसरोवर पर पहुंचती है। यहीं कहीं सोने का पुल भी है।

पुराणों के अनुसार जिसका आने-जाने के लिए भगवान इस्तेमाल करते हैं। कहते हैं कि इस जगह पर किसी का पहुंचना नामुमकिन है। मगर साहसी युवाओं का दल सरमूल पहुंचा और दल के लोगों ने अपने हाई जूम कैमरे से इस सोने के पुल को देखा तो वह हैरान रह गये। सरयू के ठीक उद्गम पर यह एक बड़ा से सोने की तरह चमचमाता हुआ पुल है। इस थका देने वाली रोमांचकारी यात्रा में शामिल हुए लोगों में दीपक जोशी, उमेश टंगड़िया, अमित उप्रेती, ग्राम प्रधान कर्मी महिपाल राम थे, जबकि झूनी गांव के स्थानीय नागरिकों ने उन्हें सरमूल तक पहुंचाने में मदद की।

विश्व के पर्यटन स्थलों में शामिल हो सकता है सरमूल

अल्मोड़ा। एक तरफ सरकार प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने की बात करती है, लेकिन सरमूल (सहस्त्रधारा) जाने के लिए प्रदेश सरकार द्वारा किसी तरह की व्यवस्था नहीं की गई है। यहां पहुंचने के लंबे पैदल मार्ग में कुछ स्थानों पर सड़क निर्माण का प्रोजेक्ट शुरू किया जा सकता है। रास्ते में पर्यटकों के रुकने की व्यवस्था होनी चाहिए। भोजन के लिए सरकारी केंटीन स्थापित होनी चाहिए, लेकिन दुर्भाग्य से सरकार ने इस ओर कतई ध्यान नहीं दिया गया है। यदि सरकार संजीदगी से प्रयास करे तो यह सरमूल विश्व के नामचीन पर्यटन स्थलों में शामिल हो सकता है।

नंग मात मासी नहीं, झूनी मास गांव नहीं...

अल्मोड़ा। बागेश्वर जनपद के अंतिम गांव झूनी के लिए एक कहावत प्रसिद्ध है। 'नंग मात मासी नहीं, झूनी मास गांव नहीं' अर्थात ' जिस तरह नाखून के ऊपर मांस नहीं होता, वैसे ही झूनी के ऊपर कोई गांव नहीं है। इसके ऊपर केवल हिमालय है, जहां से सरयू नदी की जलधारा प्रवाहित हो रही है। सुविधाओं के अभाव में इस झूनी गांव के वाशिंदे बहुत कष्ट झेल रहे हैं।

पुष्पा अध्यक्ष व दीपा सचिव निर्वाचित

संवाददाता
@ dainikuttaranchaldeep.com

दन्या। धौलादेवी स्वायत्त सहकारिता के वार्षिक सम्मेलन में हुए निदेशक मंडल के चुनाव में पुष्पा पंत अध्यक्ष व दीपा पंत सचिव चुनी गईं। इस मौके पर पशु आहार निर्माण इकाई का उद्घाटन भी किया गया।

वक्ताओं ने बताया कि धौलादेवी स्वायत्त सहकारिता की दन्या इकाई का गठन वर्ष 2013 में किया गया। इसमें कुल 11 राजस्व गांव, 24 समूह, 9 निदेशक मंडल सदस्य तथा कुल 264 महिलाएं भागीदारी निभा रही हैं। निदेशक चंद्रा पंत ने बताया कि धौलादेवी विकासखंड में समूहों के माध्यम से महिलाओं के उत्थान का कार्य किया जा रहा है। सहकारिता के माध्यम से कृषि, बागवानी, पशुपालन, डेयरी व पशु चारा यूनिट द्वारा महिलाओं की आय में वृद्धि कर उनके जीवन स्तर में सुधार का कार्य किया जाता है। सामाजिक जन आंदोलनों में भी भागीदारी की जा रही है। वार्षिक सम्मेलन के दौरान सहकारिता के विगत वर्ष से किये गये

सम्मेलन में मौजूद महिलाएं। उत्तरांचल दीप

सम्मेलन

- धौलादेवी स्वायत्त सहकारिता निदेशक मंडल के चुनाव

कार्यों व आय-व्यय का ब्यौरा भी प्रस्तुत किया गया। आगामी कार्यक्रमों व लक्ष्य की रूपरेखा भी तय की गयी। इस मौके पर धौलादेवी स्वायत्त सहकारिता में निदेशक मंडल की नई इकाई का गठन किया गया जिसमें सर्वसम्मति से पुष्पा पंत अध्यक्ष, भावना पंत कोषाध्यक्ष, दीपा देवी सचिव तथा सरस्वती देवी उपाध्यक्ष चुनी गयी। पूर्व में प्रति वर्ष कार्यकारिणी का गठन किया जाता था, किंतु इस बार यह कार्यकारिणी तीन साल के लिए गठित कर दी गयी है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सामाजिक कार्यकर्ता मनोज पंत ने शिरकत की। अध्यक्षता क्षेत्र की वरिष्ठ बुजुर्ग महिला देवकी पंत ने की। सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि पृथ्वी सिंह रावत, हरीश जोशी, पंकज बिष्ट, सुंदर रावत, परियोजना समन्वयक चंद्रा पंत, निर्मला तिवाड़ी, शिवदत्त पांडे, चंद्रशेखर, गणेश सिंह, मनोज बोरा आदि मौजूद थे।

मांगों को लेकर संघर्ष करने का निर्णय

संवाददाता
@ dainikuttaranchaldeep.com

अल्मोड़ा। संविदा आउट सोर्स वाहन चालक संघ की बैठक में अपनी मांगों को लेकर संघर्ष करने का निर्णय लिया गया।

बैठक में वाहन चालकों ने विभागों में पूर्व से कार्य कर रहे वाहन चालकों को नियमित करने, समान कार्य समान वेतन देने, चालकों को यात्रा भत्ता देने, विभागों में कार्य कर रहे चालकों को न हटाने, निर्वाचन कार्य का मानदेय देने, संविदा चालकों को नियमित चालकों की तरह वर्ष के अंत में वर्दी प्रदान करने की मांग की गयी। बैठक में वक्ताओं ने वाहन चालकों का उत्पीड़न बर्दाश्त नहीं करने की बात कही। बैठक में जिला मंत्री बलवंत सिंह, संगठन के संरक्षक गोपाल सिंह रावत, मोहन आर्य, पूरन सिंह मेहता, विनोद कुमार, प्रेम सिंह, बलवंत सिंह मेहता, शेखर भटट, चन्द्रशेखर जोशी, ललित सिंह रावत, सुरेश कुमार, नितिन दुर्गापाल, विरेन्द्र अधिकारी, योगेश आर्या आदि मौजूद रहे।

कुमाउनी भाषण प्रतियोगिता कल

अल्मोड़ा। नंदा देवी मेले के मौके पर डिग्री स्तर के विद्यार्थियों के लिये कुमाउनी भाषण प्रतियोगिता 29 अगस्त को आयोजित होगी। कुमाउनी अखबार कूर्मांचल टाइम्स के संपादक डॉ. सीपी फुलोरिया ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भाषण प्रतियोगिता का शीर्षक 'कुमाउनी भाषा संस्कृति के बचूण में नौजवानकि भूमिका' रखा गया है। उन्होंने इच्छुक प्रतिभागियों से नंदा देवी परिसर में 29 अगस्त की प्रातः 10 बजे उपस्थित होने की अपील की है।

द्वितीय मैच स्टेडियम ब्लू ने जीता, पहला टाई

स्टेडियम में जिला स्तरीय हाकी प्रतियोगिता शुरू

खिलाड़ियों का परिचय प्राप्त करते दीपक वर्मा व विजेता व उप विजेता टीमें। उत्तरांचल दीप

संवाददाता
@ dainikuttaranchaldeep.com

अल्मोड़ा। हाकी के जादूगर मेजर ध्यान चंद के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में स्थानीय स्टेडियम में इंटर स्कूल बालकों की जिला स्तरीय हॉकी प्रतियोगिता शुरू हो गई है। रविवार को हुए मैच में स्टेडियम ब्लू की टीम ने बियरशिबा स्कूल को 2-0 से पराजित किया। प्रतियोगिता में 5 टीमें भाग ले रही हैं। यह प्रतियोगिता 29 अगस्त तक जारी रहेगी।

उद्घाटन मैच हेमवती नंदन बहुगुणा स्पोर्ट्स स्टेडियम में जीआईसी अल्मोड़ा व कूर्मांचल एकेडमी के मध्य खेला गया जिसमें दोनों ही टीमें कोई गोल नहीं कर सकीं। दोनों ही टीमों को एक-एक अंक प्रदान किये गये। दूसरे मैच में स्टेडियम की टीम 2-0 से विजेता रही। इससे पूर्व प्रतियोगिता का उद्घाटन अंतर्राष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी दीपक वर्मा, जिला ओलंपिक एसो. के सचिव गोपाल सिंह खोलिया, जिला क्रीड़ा अधिकारी सीएल वर्मा, राजेंद्र बोरा आदि के स्वागत के साथ हुआ। इस मौके पर मेजर ध्यान चंद को याद किया गया। प्रतियोगिता के निर्णायकों में गणेश शाही, राजेंद्र सिंह कनवाल, बलवंत दानू, दीपक कुमार, सौरभ कोश्यारी, अजय कनवाल शामिल थे। संचालन अनीता पंवार ने किया। इस दौरान पूर्व तहसीलदार केशव लाल टम्टा, कनिष्ट सहायक भगवती प्रसाद गौड़, राजेंद्र सिंह राणा, कुंदन सिंह कनवाल, हरीश गोस्वामी, मनीष वर्मा, बलवंत सिंह मेहरा, प्रेम सिंह रावत, कैलाश राम आर्या, कृष्ण कुमार टम्टा, योगेश कुमार आदि मौजूद थे।

जागेश्वर धाम मंदिर प्रबंधन समिति के चुनाव को लेकर तनातनी

संवाददाता
@ dainikuttaranchaldeep.com

जागेश्वर। जागेश्वर धाम मंदिर प्रबंधन समिति का गठन जहां पूर्व में ही विवादों में रहा है, वहीं अब नव समिति में पुनः नियमों की अनदेखी किये जाने पर पुजारियों ने न्यायालय का दरवाजा खटखटाने का ऐलान कर दिया है।

पुजारियों का कहना है कि हाईकोर्ट के आदेश के अनुसार मंदिर प्रबंधन समिति में उपाध्यक्ष एवं प्रबंधक के पद हेतु सख्त निर्देश हैं। इसके अनुसार यह पद गैर राजनीतिक है, सिर्फ हिंदू के लिए है व पुजारी परिवार से कोई इसमें सम्मिलित नहीं हो सकता। इसमें जिलाधिकारी द्वारा कुछ गांवों को चयनित कर दस-दस लोगों के नाम उत्तराखंड के राज्यपाल के पास भेजे जाते हैं। उन्ही में से नाम चयनित कर प्रबंधक व उपाध्यक्ष की नियुक्ति की जाती है जिनका कार्यकाल तीन वर्ष का होता है जिसमें प्रबंधक का वेतनमान 20 से 25 हजार के बीच रहने की बात तय की गई है, लेकिन पूर्व में प्रबंधक का चयन राजनैतिक पकड़ के चलते पुजारी परिवार व राजनैतिक रूप से जुड़ने के बावजूद भी कर दिया गया था। जिसमें मंदिर पुजारियों ने कई बार लिखित व मौखिक रूप से प्रबंधन समिति के

विवाद

- गलत चुनाव होने पर पुजारियों ने दी कोर्ट जाने की धमकी

अध्यक्ष जिलाधिकारी अल्मोड़ा, मुख्यमंत्री, राज्यपाल व नेता प्रतिपक्ष को भी अवगत करवाया था, लेकिन इस मामले में कोई कार्रवाई नहीं हो सकी। पुजारियों के अनुसार समिति के गठन को तीन वर्ष से अधिक हो जाने के बावजूद भी उसका रजिस्ट्रेशन तक नहीं किया गया है। अब समिति का कार्यकाल तीन वर्ष पूर्ण होने पर प्रबंधन समिति के अध्यक्ष जिलाधिकारी अल्मोड़ा ने पुनः दस-दस आवेदकों को चयनित कर नाम राज्यपाल को भेज दिए हैं। पुजारियों का आरोप है कि इन नामों में से प्रबंधक प्रकाश भट्ट ने इस बार भी उपाध्यक्ष मंदिर समिति के लिए आवेदन किया है।

पुजारियों का कहना है कि अगर इस बार भी राजनैतिक पकड़ या किसी भी तरह पूर्व प्रबंधक का चयन हो जाता है तो हाईकोर्ट की अवहेलना करने व प्रशासन व राज्यपाल के पास अपने गलत तथ्य व एविडेविड भेजने, तथ्यों को छुपाने को लेकर मंदिर के पुजारी उनके खिलाफ हाईकोर्ट जायेंगे।

आस्था / इतिहास के आइने में मां नंदा देवी

उल्लास व सुख-समृद्धि की प्रतीक है मां नंदा की उपासना

अल्मोड़ा। नंदा देवी अधिष्ठात्री देवी हैं जिनको आदि शक्ति भगवती, बेटी और बहन का दर्जा दिया जाता है। कत्यूरी राजवंश ने कुमाऊं में जब अपनी प्रथम राजधानी के रूप में गरुड़ के पास शिखर पर 'कोट की माई' की स्थापना की जो इनकी ईष्ट देवी रही। यदि उससे भी पीछे जाएं तो कत्यूरी राजा आरम्भ में गढ़वाल के जोशीमठ में रहते थे। जब वह कुमाऊं के कत्यूर घाटी में रहने लगे तब राजा सोमचंद ने लगभग 1400 ई. में चंद्र वंश की स्थापना की।

राजा बाजबहादुर चंद का समय 1638 ई. से 1678 ई. स्वीकारा गया है। कार्तिकेयपुर के राजा भूदेव के बालेश्वर शिलालेख में नंदादेवी को अपनी कुल देवी कहा गया है। भूदेव के पिता ललितसूर के चमोली गढ़वाल में पाण्डुकेश्वर से दो, कंडारा से एक ताम्र पत्र मिला है जिनमें पहले शिव को तथा बाद में नंदा भगवती को अपना ईष्ट बताया। नंदादेवी चंद वंश के साथ ही कत्यूरी शासकों की भी इष्टदवी मानी जाती हैं। अल्मोड़ा में स्थित नंदा देवी का मंदिर चंद राजा उद्योत चंद ने बनाया और कुमाऊं कमिश्नर टेऊल ने नंदा स्थापना के बाद इसे नंदा देवी मंदिर कहा। नंदा का कुमाऊं व गढ़वाल में काफी प्रभाव है। विद्वान रवाई व जौनपुर को छोड़कर सभी जगह नंदादेवी की पूजा को स्वीकारते हैं

रोचक कथा है मंदिर स्थापना की

अल्मोड़ा। नंदा देवी परिसर अल्मोड़ा की स्थापना की रोचक कथा है। कुमाऊं कमिश्नर ट्रेल ने अल्मोड़े से नंदा देवी का प्राचीन मंदिर हटा दिया था। कुछ समय पश्चात जब वह नंदा देवी पर्वत पर चढ़ा तो उसकी दोनों आंखों की रोशनी समाप्त हो गई। तब लोगों ने उससे कहा कि यह नंदा देवी मंदिर हटा देने का ही दंड है। तब उसे अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने वर्तमान मंदिर परिसर की स्थापना की।

जबकि रंवाई-जौनपुर क्षेत्र में दुर्वाष्टमी पर्व मनाया जाता है। नंदा देवी को दो रूप में माना जाता है-पहला शास्त्रीय देवी तथा दूसरा लोक देवी। शास्त्रीय देवी सृष्टि की आद्य शक्ति जगत जननी के रूप में जाना जा सकता है। वहीं लोक देवी जन-जन में इस तरह से मिलती है कि उसकी कहानी, कथा अलग अलग रूप में मिलती है। उत्तराखंड में पूजी जाने वाली नंदा का उल्लेख भविष्य पुराण में भी है। धार्मिक दृष्टि से अल्मोड़ा का अतीत किसी से पीछे नहीं रहा है। नंदादेवी मंदिर हो, जागेश्वर के मंदिर हों या फिर बैजनाथ-बागेश्वर के

मां नंदा देवी मंदिर अल्मोड़ा। उत्तरांचल दीप

मंदिर हों, धार्मिक परम्पराओं को अल्मोड़ा ने बरकरार रखा। अल्मोड़ा का नंदा देवी मंदिर राजा बहादुरचंद के पुत्र उद्योत चंद ने 1680 ई. में बनाया था। वहां कचहरी से नंदा देवी की मूर्ति को स्थापित किया गया। 1670 ई. में कुमाऊं के चंदवंशी शासक राजा बाज बहादुर चंद बघानगढ़ के किले से नंदा देवी की स्वर्ण प्रतीमा को वह उपहार के रूप में अल्मोड़ा ले आए जो अल्मोड़ा के रामशिला के एक प्रखंड पर थाप दिया। 1699 ई0 में राजा ज्ञान चन्द्र भी बधानकोट से स्वर्ण प्रतिमा अल्मोड़ा लाए। यह प्रतिमा सन् 1710 ई0 में राजा जगत चन्द्र को बधानकोट विजय के अवसर पर नंदा देवी की मूर्ति प्राप्त नहीं हुई। इस कारण उन्होंने अपने राज खजाने से 200 अशरफियां गला कर नंदा देवी की मूर्ति का निर्माण कराकर मल्ला महल में स्थापित करा दिया था। अल्मोड़ा में नौ दुर्गा की स्थापना का श्रेय भी उद्योत चन्द को ही जाता है। नंदा देवी मेला भी चंद वंश की परम्पराओं के अनुसार ही चलता आ रहा है। यहां पंचमी में केले के तनों और पीले वस्तों से नंदा की दो प्रतिमा बनाई जाती हैं। राज भर जागर होता है। यह प्रतिमाएं कदली स्तम्भों से निर्मित होती है। नंदा देवी पर्वत के अनुसार ही इन प्रतिमाओं को रूप प्रदान किया जाता है। तंत्र-मंत्रों से पूजन किया जाता है। बलिदान और तंत्र-मंत्र पढ़कर पूजा-अर्चना की जाती है।

तांत्रिक पद्धति से मां नंदा के तारा रूप का पूजन

अल्मोड़ा। अल्मोड़ा में नंदा को तारा रुप में पूजा जाता है। भगवती के तीन रुप हैं जिसमें तारा की उपासना तांत्रिक विधि से होती है। इस तांत्रिक पद्धति को आगमोक्त विधि या आगमोक्त पद्धति कहते हैं। कत्यूरी व चंद काल से युद्ध देवी के रूप में यहां तारा देवी को पूजा जाता रहा है। मां नंदा देवी की पूजा विशुद्ध शाक्त पद्धति के अनुसार बलिदान व कन्या कुंवारी पूजन, षोडशोपचार विधि से किया जाता है जिसमें भैरव आदि का भी जिक्र आता है। इन प्रतिमाओं को बनाने के पीछे भी तंत्र काम करता है।

कदली वृक्ष निमंत्रण का है विशेष महत्व

अल्मोड़ा। षष्ठी को गोधूली समय पर कदली वृक्षों को निमंत्रण देने के लिए जाया जाता है। जहां कदली के वृक्षों का चयन करने के लिए मुट्ठी से कदली वृक्ष पर चावल डाले जाते हैं, जो वृक्ष पहले हिलता है, उससे नंदा, जो दूसरा हिला है, उससे सुनंदा तथा जो अंतिम हिलता है, उससे नंदा-सुनंदा के हाथ आदि बनाये जाते हैं। इन वृक्षों को लाने के लिए पिठ्वा, अक्षत, चंदन, प्रसाद, लाल व श्वेत वस्त्र, धूप आदि ले जाया जाता है। दूसरे दिन उनको प्रातः मंदिर परिसर में लाया जाता है। मंदिर के द्वार पर उन वृक्षों का विधिवत् पूजन किया जाता है। तत्पश्चात उनसे प्रतिमाएं निर्मित की जाती हैं।

केसी सिंह बाबा करते हैं पूजा का प्रतिनिधित्व

अल्मोड़ा। अगस्त-सितंबर माह में नंदा देवी मेले का आयोजन किया जाता है। राज परिवार के केसी सिंह बाबा पूजा -अर्चना में शामिल होते हैं तब विधिवत पूजा का आरम्भ होता है। अष्टमी के दिन मंदिर में विशेष पूजा होती है। वर्ष 2006 से नियमित नंदा देवी मेले में नवमी की प्रातः बेला पर समाजसेवी चंदनाथ साह के परिवार द्वारा नंदा देवी की पूजा कर, फल चढ़ाकर तथा खीर का भोग लगा कर भक्तों को खीर रूप में प्रसाद बांटा जाता है। इसमें अल्मोड़ा की वैवाहिक स्त्रियां मंदिर को अल्पनाओं से भर देती हैं।

- डॉ. ललित चंद्र जोशी 'योगी',
गेस्ट प्रवक्ता, पत्रकारिता एवं
जनसंचार विभाग, एसएसजे
परिसर, अल्मोड़ा